एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 05 (मई, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

ई-नाम (e-NAM) और कृषि बाजारों का डिजिटलीकरण

*डॉ. अम्बरीश कुमार वर्मा[1] एवं राज करण साहू[2]
[1]तकनीकी सहायक, कृषि विभाग (प्रसार प्रभाग), उत्तर प्रदेश सरकार, भारत
[2]शोधार्थी, कृषि अर्थशास्त्र, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: vermaambrish9999@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां देश की बड़ी आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। किसानों की आय को बढ़ाने और कृषि उत्पादों को उचित मूल्य दिलाने के लिए सरकार द्वारा समय-समय पर कई पहलें की गई हैं। इन्हीं पहलों में से एक है ई-नाम (e-NAM) प्लेटफ़ॉर्म। यह भारत सरकार की एक डिजिटल पहल है, जिसका उद्देश्य कृषि उपज विपणन में पारदर्शिता, दक्षता और एकीकृत बाज़ार प्रणाली की स्थापना करना है।

ई-नाम (e-NAM) क्या है?

ई-नाम (National Agriculture Market) एक ऑनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफ़ॉर्म है, जो देश भर की मंडियों को एक साझा डिजिटल नेटवर्क पर जोड़ता है। इसकी शुरुआत 14 अप्रैल 2016 को की गई थी। इसका उद्देश्य कृषि उत्पादों की बिक्री में पारदर्शिता लाना, किसानों को बेहतर दाम दिलाना, और बिचौलियों की भूमिका को कम करना है।

मुख्य विशेषताएं

- देश भर की APMC मंडियों को जोड़ना
- रियल टाइम प्राइस की जानकारी
- इलेक्ट्रॉनिक बोली और भुगतान प्रणाली
- मोबाइल ऐप और वेबसाइट के माध्यम से सेवा
- एकीकृत लाइसेंस प्रणाली

ई-नाम के लाभ

1. किसानों को बेहतर मूल्य: ई-नाम के माध्यम से किसान अपनी उपज को विभिन्न खरीदारों को ऑनलाइन बेच सकते हैं, जिससे प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और किसान को अधिक मूल्य मिलता है।
2. पारदर्शिता: मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया डिजिटल होती है, जिससे भ्रष्टाचार की संभावना कम होती है और व्यापारी व किसान दोनों को स्पष्ट जानकारी मिलती है।
3. बिचौलियों की भूमिका में कमी: किसानों को सीधे खरीदारों से जोड़ने के कारण बिचौलियों की आवश्यकता घटती है, जिससे किसानों का मुनाफा बढ़ता है।
4. ऑनलाइन भुगतान प्रणाली: सुरक्षित और तेज भुगतान व्यवस्था किसानों को समय पर भुगतान दिलाने में सहायक है।
5. मंडियों का डिजिटलीकरण: ई-नाम के तहत मंडियों में इलेक्ट्रॉनिक तौल मशीन, गुणवत्ता जांच लैब, और कंप्यूटर सिस्टम जैसी सुविधाओं को बढ़ाया गया है।

कृषि बाजारों का डिजिटलीकरण

महत्व: भारत में पारंपरिक कृषि बाजारों में अनेक समस्याएं रही हैं – जैसे मूल्य में भिन्नता, जानकारी की कमी, और बिचौलियों की अधिकता। डिजिटलीकरण से यह समस्याएं काफी हद तक सुलझाई जा सकती हैं।

प्रमुख प्रयास

1. **APMC मंडियों का आधुनिकीकरण:** मंडियों को तकनीकी रूप से सशक्त बनाना – जैसे सीसीटीवी, ई-बोली सिस्टम, डिजिटल भुगतान इत्यादि।

2. **किसानों को डिजिटल प्रशिक्षण:** ई-नाम और अन्य प्लेटफार्म का प्रयोग करने के लिए किसानों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।
3. **मोबाइल ऐप और SMS सेवाएं:** कीमतों, मौसम, और फसल संबंधी जानकारियां मोबाइल के माध्यम से दी जा रही हैं।
4. **फसल कटाई के बाद मूल्य श्रृंखला में सुधार:** गुणवत्ता परीक्षण, भंडारण, और लॉजिस्टिक्स सेवाएं भी डिजिटल रूप में जुड़ रही हैं।

चुनौतियां और समाधान

चुनौतियां

- इंटरनेट और तकनीकी सुविधाओं की कमी
- किसानों में डिजिटल साक्षरता की कमी
- राज्य स्तर पर मंडी सुधारों की धीमी गति
- अनेक राज्यों में ई-नाम के प्रति उदासीनता

संभावित समाधान

- ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट कनेक्टिविटी को बेहतर बनाना
- किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम
- राज्यों के बीच समन्वय और नीति सुधार
- पीपीपी मॉडल के तहत तकनीकी सेवाओं को बढ़ावा

निष्कर्ष

ई-नाम और कृषि बाजारों का डिजिटलीकरण भारत में कृषि सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह किसानों को न केवल बेहतर दाम दिलाने में सहायक है, बल्कि संपूर्ण कृषि व्यवस्था को आधुनिक और पारदर्शी बनाने में भी इसकी अहम भूमिका है। हालांकि चुनौतियां हैं, परंतु सरकार, निजी क्षेत्र, और किसानों के मिलकर प्रयास करने से यह पहल ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकती है।